Internal Test Exam

Sems-VI

Paper:- CC-13 — Full marks - 25

Sub :- Auditing and corporate Governance — Time - I (Hours)

भाग-I

5×1 = 5

1) Auditing is:-
(i) An art (ii) A Science (iii) Both of these (iv) None of these

2) Where book-keeping ends there:-
(i) Auditing begins (ii) Accountancy begins (iii) Investigation begins (iv) None of these.

3) Accountency being where:-
(i) Book keeping ends (ii) Auditing ends (iii) Investigation begins (iv) None of these.

4) Statutory audit is:-
(i) compulsory (ii) voluntary (iii) optional (iv) None of the Two.

5) Under which section a company auditor is appointed:-
(i) 139 (ii) 143 (iii) 145 (iv) 252

भाग-2

किन्ही चार प्रश्नों का उत्तर दे।

4×5 = 20

i) अंकेक्षण से आप क्या समझते है?
(what do you understand by Auditing.

i) लेखाकर्म और अंकेक्षण में अन्तर स्पष्ट करे?
Differentiate between Accountancy and Auditing.

ii) प्रमाणन क्या है?
What is Voching.

IV) लागत अंकेक्षण क्या है?
What is cost Audit.

V) अंश और ऋणपत्र मे अन्तर स्पष्ट करे?
Differentiate between Share and dibenture.

vi) निगमीय शासन का क्या अर्थ है?
What is meant by corporate Governance.

Scanned with OKEN Scanner

Date ______
Page ______

MID SEMESTER EXAM, YEAR 2022 Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010 नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम शहबाज अनवर	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर
पिता/पति का नाम शकील अहमद	वीक्षक का हस्ताक्षर Aman
सत्र 2019-2022 क्लास B.COM परीक्षा तिथि 19/10/2022	सेमेस्टर VI
विषय CC-13 पंजीयन संख्या (Regd. No.) NPU/17899/19	कुल पूर्णांक 19/25
विश्वविद्यालय रौल नं. 20008080860	प्राप्तांक
	परीक्षक का हस्ताक्षर Shahbaz anwar

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

भाग - I

(1) Both of these

(2) Accountancy begins

(3) Book keeping Ends

(4) Compulsary 05

(5) 139

Date
Page

भाग - 2

(1) Ans अंग्रेजी भाषा का आडिट (Audit) शब्द लैटिन भाषा के आडिरे (Audire) से बना है जिसका अर्थ होता है सुनना। प्रारम्भ में अंकेक्षण का कार्य लेखापालकों द्वारा लेखा पुस्तकों में किये गये लेखों को सुनकर ही किया जाता है। उस समय लेखापाल अपने द्वारा किये गये लेखे को किसी अधिकृत व्यक्ति या न्यायाधीश के समक्ष पढ़कर सुनाता था और वह न्यायाधीश ही अंकेक्षक कहा जाता था।

वस्तुतः अंकेक्षण की परिभाषा कुछ ही शब्दों में किया जाना सम्भव नहीं है क्योंकि लेखाकर्म के क्षेत्र में विकास के कारण अंकेक्षण की परिभाषा भी समय-समय पर बदलती रही है तथा विभिन्न विद्वानों दृष्टिकोण से दी है जिनमें भिन्नता पायी जाती है। कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएँ निम्न हैं।

(1) आर. बी. विलियम्स के शब्दों में, "अंकेक्षण से आशय व्यापार की पुस्तकों, खातों तथा प्रमाणकों की जाँच से है ताकि यह पता लगाया जा सके कि व्यवसाय का सही तथा उचित चित्र प्रस्तुत करने हेतु चिट्ठा नियमानुकूल बनाया गया है या नहीं।

(2) ई० डब्ल्यू हैरान के शब्दों में, लेखा पुस्तकों तथा उनके आधार पर निर्मित विवरणों की सत्यता की जानकारी लिए की गयी जाँच अंकेक्षण कहलाती है।

निष्कर्ष के रूप में

अंकेक्षण किसी संस्था की लेखा पुस्तकों की ऐसी विवेचनात्मक जाँच है जोकि एक योग्य निष्पक्ष विवकशील तथा स्वतन्त्र व्यक्ति द्वारा प्रमाणकों पुस्तों एवं अन्य सूचनाओं के आधार पर की जाती है तथा जिसका मुख्य उद्देश्य रिपोर्ट देना है।

(04)

Ans. लेखाकर्म और अंकेक्षण में निम्नलिखित अन्तर है।

लेखाकर्म	अंकेक्षण
(1) यह संस्था के लाभ हानि व आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए तैयार किया जाता है।	(1) इसका उद्देश्य लाभ हानि एवं आर्थिक स्थिति की शुद्धता का पता लगाना होता है।
(2) लेखाकर्म वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ पुस्तपालन समाप्त होता है।	(2) अंकेक्षण वहाँ प्रारम्भ होता है।
(3) लेखाकार अपने तथा प्रस्तकार्य के कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है।	(3) अंकेक्षक केवल अपने कार्यों के लिए ही उत्तरदायी होता है।
(4) लेखापाल संस्था का ही कर्मचारी होता है।	(4) अंकेक्षक बाहरी व्यक्ति होता है अथवा संस्था का कर्मचारी नहीं होता है।
(5) लेखापाल को नियमितरूप से वेतन दिया जाता है।	(5) अंकेक्षक का पारिश्रमिक अनुबन्ध के ऊपर निर्भर करता है।
(6) इसका जन्म 1494 ई० में हुआ है।	(6) इसका जन्म 1913 ई० में हुआ है।
(7) एक लेखापाल अंकेक्षक का काम नहीं कर सकता	(7) एक अंकेक्षक कार्य समाप्ति के बाद अपना प्रतिवेदन देता है।
(8) लेखापाल कोई प्रतिवेदन नहीं देता है।	

04

③ Ans प्रमाणन अंकेक्षण को आधार मिला है, अतः प्रमाणन करते अंकेक्षक को बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए प्रमाणन का तात्पर्य केवल लेखा पुस्तकों में की गई प्रविष्टियों की लिखित प्रमाणों यथा प्रसंविदाओं प्राप्तियों प्राप्ति पुस्तकों की नकलों आदि वह भी देखना है कि लेनदेन उचित अधिकारी की अनुमति से हुआ है।

अंकेक्षक जब अपना कार्य प्रारम्भ की जाँच करते समय उसे प्रारम्भिक लेखा पुस्तकों की जाँच करनी पड़ती है तथा लेखा की पुस्तकों की प्रविष्टि सही है तथा पर्याप्त प्रमाणक के आधार पर प्रविष्टि की गयी है वस्तु इसी प्रक्रिया को प्रमाणन कहते हैं।

कुछ विद्वानों ने प्रमाणन की परिभाषा दी है जो इस प्रकार है।

(1) जे आर बाटलीबॉय के शब्दों में प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकों में लिखे जाने वाले लेखों की सत्यता जाँच करना प्रमाणन कहलाता है।

(2) आर्थर डब्ल्यू होम्स के शब्दों में प्रमाणन उससे या प्रमाणकों की जाँच से सम्बन्ध है जो एक लेनदेन को शुद्धता की परिभाषा के जद में का उचित लेखांकन की पुस्तकों में किये करना तथा इन प्रमाणकों एवं प्रणकों के आधार पर आगम में

करता है

6Ans शासन शब्द की जड़ ग्वाबरनेट से प्राप्त होती है जिसका अर्थ निर्देशन करना होता है। निगमीय शासन का अर्थ यह है कि उपक्रम को सही दिशा में लेजाना। यह कठिन कार्य को निदेशक मण्डल के पास होता है। अतः शासन अच्छा अथवा बुरा हो सकता है जब कम्पनी का सिन्ता तथा विश्लेषण है परन्तु यदि कम्पनी का शासीमिक परिपद नहीं है व

(1) जम्स डी वेल्थफेल्सन - निगमीय शासन का सम्बध निगमीय परिकल्पिता तथा जवाबदेहता को बढ़ाना है।

(2) भारती औद्योगिक समूह का निगमीय शासन कोड (1998) निगमीय शासन विभिन्न कानूनो प्रक्रियाओं व्यवहारों तथा नियमों के साथ चलता है जो कम्पनी को क्षमताओं का आकलन करता है। पूरे विश्व मे अच्छे निगमीय शासन का एक ही उद्देश्य है कि अंशधारियों के मूल्य को अधिकतम करना है।

03

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20__ Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010 नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम दिनेश कुमार
पिता/पति का नाम चनारिक महतो
सत्र 2019-22 क्लास .... परीक्षा तिथि 19/10/2021 सेमेस्टर VI
विषय CC-13 पंजीयन संख्या (Regd. No.) NPU/17894/19 कुल पूर्णांक 25
विश्वविद्यालय रौल नं. 200080800855 प्राप्तांक 19
परीक्षार्थी का हस्ताक्षर Dinesh kumar
वीक्षक का हस्ताक्षर [signature]
परीक्षक का हस्ताक्षर

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

भाग – I

(1) Ans:- Both of these

(2) Ans:- Accountancy begins

(3) Ans- Book keeping ends

(4) Ans:- Compulsory

(5) Ans:- 139

05

भाग – 2

(1) Ans:- अंग्रेजि भाषा का आडिट शब्द लेटिन भाषा के आडिरे से बना है जिसका अर्थ होता है सुनना। प्रारम्भ में अंकेक्षण का कार्य लेखापालक द्वारा लेखा पुस्तकों में किया गया लेखो को सुनकर ही किया जाता है उस समय लेखापालक अपने द्वारा किये गये लेखो को किसी अधिकृत व्यक्ति या न्यायाधीश के समक्ष पढ़कर सुनाता था और वह न्यायाधीश जिसे अंकेक्षक कहा जाता है

वस्तुत अंकेक्षण की परिभाषा कुछ ही शब्दों में दिया जाना सम्भव नही है क्योकि लेखाकर्म के क्षेत्र में विकास के कारण अंकेक्षण की परिभाषा भी समय समय पर बदलती रही है तथा विभिन्न विद्वानो ने भी समय - समय पर इसकी परिभाषा अपने दृष्टिकोण से देते रही है जिसमे विभिन्नतायें पाये जाते है

कुछ प्रमुख विद्वानो द्वारा विभिन्न परिभाषाएं दिए है।

(1) आर बी बिलियम्स के शब्द मे "अंकेक्षण से आशय व्यापार की पुस्तको खातो तथा प्रमाणको की जाँच से है ताकि यह पता लगाया जा सके कि व्यवसाय का सही तथा उचित चित्र प्रस्तुत करने हेतु चिट्ठा नियमानुकूल बनाया जा सके गया या नही।

(2) ए० डब्लू हैरना के शब्दो मे "लेखा पुस्तको तथा अंक आधार पर निर्मित विवरणो की सत्यता है।

निष्कर्ष के रूप मे अंकेक्षण कहलाती है यह किसी संस्था की लेखा पुस्तको के रूप मे अंकेक्षण ऐसी निर्णयात्मक जाँच है जो कि एक योग्य निष्पक्ष विवेकशील तथा स्वतंत्र व्यक्ति द्वारा प्रमाणको प्रपत्रो एवं अन्य सूचनाओ के आधार पर की जाती है तथा जिसका मुख्य उद्देश्य पर की जाती है तथा जिसका मुख्य व्यय का विपरीत देना होता है।

04

(२) निम्न अन्तर है —

(i) यह संस्था के लाभ-हानि व आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए किया जाता है	इसका उद्देश्य लाभ हानि एवं आर्थिक स्थिति की शुद्धता का पता लगाना होता है
(ii) लेखाकर्म वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ पुस्तपालन समाप्त होता है	अंकेक्षण वहाँ पर प्रारम्भ होता है जहाँ पर लेखाकर्म समाप्त होता है
(iii) लेखाकार अपने को पुस्तपालक के कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है।	अंकेक्षक केवल अपने कार्यों के लिए ही उत्तरदायी होता है।
(iv) लेखापाल की संस्था का ही कर्मचारी होता है।	(iv) यह लेखापाल की बाहरी व्यक्ति के होते है संस्था कर्मचारी नहीं होता।
(v) लेखापाल संस्था को नियमित रूप से वेतन दिया जाता है	(v) अंकेक्षक बाहरी पारिश्रमिक अनुबन्ध के ऊपर निर्भर करता है
(vi) इसका जन्म 1494 ई० में हुआ है	इसका जन्म 1913 ई० में हुआ है
(vii) यह लेखापाल का अंकेक्षक का काम नहीं कर सकता	(vii) एक अंकेक्षक लेखापाल का काम कर सकता है

64

(3) प्रमाणन अंकेक्षण की आधार शिला है प्रमाणन करना समय अंकेक्षक को बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए प्रमाणन का लिखित प्रमाणो प्राप्तियों प्रमाणित पुस्तकों का लिखित प्रमाणो से मिलान ही नहीं है बल्कि यह भी देखना है कि लेन देन उचित अधिकारी की अनुमति से हुआ है।

अंकेक्षक जब अपना कार्य शुरू करता है तो सर्वप्रथम पहले उसे प्रारंभिक लेखा पुस्तकों की जाँच करते समय उसे यह देखना होता है कि प्रत्येक लेखा को प्रतिलिपि सत्य है तथा पर्याप्त प्रमाणक के आधार पर प्रमाणन कहते है।

कुछ विद्वानों ने प्रमाणन की परिभाषाएँ इस प्रकार है।

(1) डी मार बाटलीबॉय के शब्द में प्रमाण उपलब्धता या प्रमाणकों की जाँच एवं सत्यापन से जो एक लेनदेन की शुद्धता का समर्थन करते है आदर्श परिभाषा के रूप में किये गये लेखो की प्रमाणकों के आधार पर जाँच करना होता है

03

Date ______ Page ______

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20__ Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

लहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010 नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम: निशान्त सागर	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर: Nishant Sagar
पिता/पति का नाम: श्री रविन्द्र प्रसाद	वीक्षक का हस्ताक्षर: [signature]
सत्र: 2019-22 क्लास: B.C. परीक्षा तिथि: 19/10/22	सेमेस्टर:
विषय: CC-13 पंजीयन संख्या (Regd. No.): NPU17895	कुल पूर्णांक: 20
विश्वविद्यालय रौल नं.: 200080800856/19	प्राप्तांक: 05
	परीक्षक का हस्ताक्षर:

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

भाग – I

1) Both of these

2) Accountancy begins

3) Book keeping ends.

4) Compulsory

5) 139

05

भाग - 2

1) Ans: अंग्रेजी भाषा का ऑडिट (Audit) शब्द लैटिन भाषा के ऑडिट (Audire) से बना है, जिसका कार्य लेखापालक द्वारा लेखा पुस्तकों में किये गये लेखों को सुनकर ही किया जाता है। उस समय लेखापाल अपने द्वारा किये गए लेखा पढ़कर सुनाता था और वह न्यायधीश जिसे अंकेक्षक कहा जाता था।

वस्तुतः अंकेक्षण की परिभाषा कुछ ही शब्दों में दिया जाना सम्भव नहीं है क्योंकि लेखाकर्म के क्षेत्र में विकास नहीं है क्योंकि कारण बदलती रहती है तथा विभिन्न विद्वानों ने भी समय - समय पर इसकी परिभाषा अपने दृष्टिकोण से दी है, जिसमें विभिन्नता पायी जाती है।

कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएं निम्न हैं:-

1) आर. जी. विलियम्स के शब्द में " अंकेक्षण से आशय व्यापार की पुस्तकों खाता तथा प्रमाणकों की जांच से है ताकि यह पता लगाया जा सके कि व्यवसाय का सही तथा उचित चित्र प्रस्तुत करते हुए चिट्ठा नियमानुसार बनाया गया है या नहीं।"

2) ए० डब्लू हेरान के शब्दों में " लेखा पुस्तकों तथा संस्था आधार पर लिखित विवरणों की सत्यता की निष्कर्ष के रूप में " अंकेक्षण किसी संस्था की लेखा पुस्तकों की ऐसी

विवेचनात्मक जाँच जो की एक योग्य निष्पक्ष विवेकशील तथा स्वतंत्र व्यक्ति द्वारा प्रमाणकों प्रपत्रों एवं अन्य सूचनाओं के आधार पर की जाती है तथा जिसका मुख्य उद्देश्य निर्णय देना होता है।

04

Ans :- लेखाकर्म और अंकेक्षण में निम्नलिखित अन्तर है।

लेखाकर्म	अंकेक्षण
1) यह संस्था के शुद्ध लाभ-हानि व आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए तैयार किया जाता है।	1) इसका उद्देश्य लाभ-हानि एवं आर्थिक स्थिति की शुद्धता का पता लगाना होता है।
2) लेखाकर्म वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ पुस्तपालन समाप्त होता है।	2) अंकेक्षण वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ लेखाकर्म समाप्त होता है।
3) लेखाकार अपने तथा पुस्तकालय के कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है।	3) अंकेक्षक केवल अपने कार्यों के लिए ही उत्तरदायी होता है।
4) लेखापाल संस्था का ही कर्मचारी होता है।	4) अंकेक्षक बाहरी व्यक्ति होता है अर्थात संस्था का कर्मचारी नहीं होता है।
5) लेखापाल को नियमित रूप से वेतन दिया जाता है।	5) अंकेक्षक का पारिश्रमिक अनुबन्ध के ऊपर निर्भर करता है।
6) लेखापाल का जन्म 1494 ई० में हुआ है।	6) इसका जन्म 1913 ई० में हुआ है।
7) एक लेखापाल अंकेक्षण का काम नहीं कर सकता।	7) एक अंकेक्षक कार्य समाप्ति के बाद अपना प्रतिवेदन देता है।
8) लेखापाल कोई प्रतिवेदन नहीं देता है।	7) एक अंकेक्षक लेखापाल का काम कर सकता है।

04

3) Ans: प्रमाणन अंकेक्षण की आधारशिला है अतः प्रमाणन करते समय अंकेक्षक को बड़ी सावधानि से काम लेना चाहिए प्रमाणन का तात्पर्य केवल लेखा पुस्तकों में की गई प्रविष्टियों को लिखित प्रमाणों जैसे - फुसोविदयो प्राप्तियो पुस्तकों की कला आदि से मिलान ही नही है बल्कि यह भी देखना है कि लेनदेन उचित अधिकारी की अनुमती से हुआ हो तथा लेखा पुस्तकों मे प्रविष्ट कर ली गयी है।

अंकेक्षक जब अपना कार्य प्रारम्भ करता है तो सबसे पहले उसे प्रारम्भिक लेखा पुस्तको की जॉंच करते समय उसे करनी पड़ती है तथा लेखा की पुस्तकों की प्रत्येक लेखो की प्रविष्ट सत्य हो तथा प्रमाणित इसी क्रीया को प्रमाणन कहते हैं।

कुछ विद्वानों ने प्रमाणन की परिभाषाएं दी है जो इस प्रकार है :-

1) जे. आर बाटलीबॉय के शब्दो मे "प्रारम्भिक लेख की पुस्तको मे लिखे जाने वाले लेखो की सत्यता जॉंच करना प्रमाणन कहलाता है।

2) आर्थर डब्लयु होम्स के शब्दो मे "प्रमाण उपलब्ध या प्रमाणको की जॉंच एवं सत्यता है जो एक लेनदन की शुद्धता का समर्थन करता है।

आदर्श परिभाषा के रूप मे प्राप्त का आशय लेखांकन की पुस्तकों मे किये गये तथा लेखा की लेखा की प्रमाणको के आधार पर जांच करना तथा इन प्रमाणको की भी इस आशय मे जांच करना है की कार्य ठीक है या नही, इस जांच यह ज्ञात करता है की पुस्तको मे किये गये लेखे सत्य उचित एवं अधिकृत है।

(04)

4) Ans. शासन शब्द की जड Gubernate से प्राप्त होती है जिसका अर्थ निर्देशन करना होता है। नियमित शासन का अर्थ यह है की उपक्रम को सही दिशा मे ले जाना। यह दायित्व कम्पनी की निर्देशक मण्डल के पास होता है। अतः शासन उच्चस्तर अथवा बुरा हो सकता है। जब कम्पनी का सिस्टम तथा नियन्त्रण सही दिशा मे होता है तथा सभी अंशधारियो के हितो को ध्यान मे रखा जाता है तो यह कहा जाता की कम्पनी का सिस्टम गलत दिशा मे जा रहा है अथवा कोई कमी है तो उसे बेकार शासन कहा जाता है।

नियमित शासन की कोई एक सार्वभौमिक परिभाषा नही है। विभिन्न विद्वानो ने कई वर्षो के अनुसार एवं उनका अनुबंधो के आधार पर नियमित शासन की अलग-अलग परिभाषाएं दी है।

1) जेम्स डी वेकेन्सन - नियमित शासन का सम्बन्ध नियमित परिवर्तिनो तथा जवाब देहता को बताता है।

Date ______
Page ______

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20

Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010

नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम ...Danish Ansari...	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर ....
पिता/पति का नाम ...Ayub Ansari...	वीक्षक का हस्ताक्षर ...Ansari...
सत्र ...2019-22... क्लास ...B.Com. III... परीक्षा तिथि ...19/10/22...	सेमेस्टर ....
विषय ...CC-13... पंजीयन संख्या (Regd. No.) ...NPU/17893/19...	कुल पूर्णांक ...25...
विश्वविद्यालय रौल नं. ...09...	प्राप्तांक ...18...
	परीक्षक का हस्ताक्षर ....

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

भाग - I

(1) Both of these.

(2) Accountancy beyond.

(3) Book Keeping end.

(4) Compulsory

(5) 139

05

Scanned with OKEN Scanner

भाग-2.

1 Ans. अंग्रेजी भाषा का ऑडिट (Audit) शब्द लैटिन भाषा के आडिरे (Audire) से बना है जिसका अर्थ होता है सुनना। प्राचीन ~~से बना है जिसका~~ में अंकेक्षण का कार्य लेखापालकों द्वारा लिखी पुस्तकों में लिपिबद्ध ~~का कार्य~~ किये गये लेखों को सुनकर ही किया जाता है। उस समय लेखापाल अपने द्वारा किये गये लेखा का किसी अधिकृत व्यक्ति या न्यायाधीश के समक्ष पढ़कर सुनाता था और वह न्यायाधीश जिसे अंकेक्षक कहा जाता था।

वस्तुतः अंकेक्षण की परिभाषा कुछ ही शब्दों में ~~दिया~~ दिया जाना सम्भव ~~नहीं~~ नहीं है क्योंकि लेखाकर्म के क्षेत्र में विकास के कारण अंकेक्षण की परिभाषा भी समय-समय पर बदलती रही है तथा विभिन्न विद्वानों ने भी समय-समय पर इसकी परिभाषा अपने मतानुसार दी है। जिनमें भिन्नता पायी जाती है। कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएँ निम्न है।

11 आर. जी. विलियम्स के शब्दों में, "अंकेक्षण से आशय व्यापार की पुस्तकों, खातों तथा प्रमाणकों की जाँच से है ताकि यह पता लगाया जा सके कि व्यवसाय ~~सी~~ है ताकि यह पता लगाया जा सके कि व्यवसाय की सही तथा उचित चित्र प्रस्तुत करने हेतु चिट्ठा नियमानुकूल बनाया गया है या नहीं।"

6) R.C. डलहू हैसल के शब्दों में "लेखा पुस्तकों की बही की सत्यता की जानकारी लिए की गई जांच अंकेक्षण कहलाती है।

मि स्पाईसर के रूप में "अंकेक्षण किसी संस्था की लेखा पुस्तकों की ऐसी निरीक्षणात्मक जांच है जो कि एक योग्य विशेषज्ञ द्वारा की जाती है तथा सत्यता व प्रमाणित प्रमाणकों व प्रमाणों के आधार पर की जाती है तथा जिसका मुख्य उद्देश्य सिर्फ़ ही देखना होता है।

04) लेखाकर्म और अंकेक्षण में निम्नलिखित अन्तर है।

	लेखाकर्म	अंकेक्षण
1)	यह संस्था के लाभ हानि व आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए तैयार किया जाता है।	इसका उद्देश्य लाभ हानि एवं आर्थिक स्थिति की शुद्धता का पता लगाना होता है।
2)	लेखाकर्म वहीं प्रारम्भ होता है जहाँ पुस्तपालन समाप्त होता है।	2) अंकेक्षण वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ लेखाकर्म समाप्त होता है।
3)	लेखाकार अपने तथा पुस्तपालक के कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है।	3) अंकेक्षक केवल अपने कार्यों के लिए ही उत्तरदायी होता है।
4)	लेखापाल संस्था का ही कर्मचारी होता है।	4) अंकेक्षक बाहरी व्यक्ति

5)	लोकपाल को नियमित रूप से वेतन दिया जाता है।	होता है अर्थात संस्था का कर्मचारी नहीं होता है।
		5) ओम्बुड्समैन का पारिश्रमिक अनुबंध के ऊपर निर्भर करता है।
6)	इसका जन्म 1575 ई० में हुआ था।	6) इसका जन्म 1913 ई० में हुआ था।
7)	एक लोकपाल ओम्बुड्समैन का काम नहीं कर सकता।	7) एक ओम्बुड्समैन लोकपाल का काम कर सकता है।
8)	लोकपाल कोई पेंशन नहीं लेता है।	8) एक ओम्बुड्समैन कार्य समाप्ति के बाद अपना हानि वेतन लेता है।

03

प्रमाणिक प्रमाणन अंकेक्षण की आधार शिला है अतः प्रमाणन करते समय अंकेक्षक को बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए प्रमाणन मालाप्रति के बल लेखा पुस्तकों में की गई प्रविष्टियों को लिखित प्रमाणों जैसे- प्राप्तियाँ, प्रतिलिपि, सम्पादित पुस्तकों को बहियों से मिलान ही नहीं है बल्कि यह भी देखना है कि लेनदेन को लेखा पुस्तकों में प्रविष्टि सत्य की गयी है।

अंकेक्षक जब अपना कार्य प्रारम्भ करता है तो सबसे पहले उसे प्रारम्भिक लेखा पुस्तकों की जाँच करनी पड़ती है तथा लेखा की पुस्तकों की जाँच करते समय उसे यह देखना होता है कि प्रत्येक लेखा की प्रविष्ट प्रविष्टि सत्य है तथा पर्याप्त प्रमाणक के आधार पर प्रविष्टि की गयी है। वस्तुतः इसी प्रक्रिया को प्रमाणन कहते हैं।

कुछ विद्वानों ने प्रमाणन की परिभाषाएं दी हैं जो इस प्रकार है।

1) प्रो. आर. बाटलीबॉय के शब्दों में " प्रारम्भिक लेखों पुस्तकों में लिखे जाने वाले लेखों की सत्यता की जाँच करना प्रमाणन कहलाता है।"

2) आर्थर डब्ल्यू होम्स के शब्दों में " प्रमाण उन लिखित प्रमाणकों की जाँच एवं सत्यापन है जो एक लेनदेन की शुद्धता को समर्थन करते हैं।" आदर्श परिभाषा के रूप में " प्रमाणन लेखों की प्रमाणकों के आधार पर जाँच

करना तथा वित्तीय प्रमाणकों की भी इस आधार से जाँच करना है कि वे ठीक है या नहीं इस जाँच का यह ज्ञात करना है कि पुस्तकों में किसी प्रकार के लेखे सत्य प्रतीत एवं उचित है।

5। शासन शब्द की उत्पत्ति गवर्नेंस से प्राप्त होती है जिसका अर्थ नियंत्रण करना होता है। निगमीय शासन का अर्थ यह है कि उपक्रम को सही दिशा में ले जाना। यह दायित्व कम्पनी की निदेशक मण्डल में पाया होता है। अतः शासन अच्छा अथवा बुरा हो सकता है। जब कम्पनी का सिस्टम तथा नियंत्रण सही दिशा में होता है तथा सभी अंशधारियों के हितों को ध्यान में रखा जाता है तो यह कहा जाता है कि कम्पनी का शासन अच्छा है परन्तु यदि कम्पनी का सिस्टम गलत दिशा में जा रहा है अथवा कोई कमी है तो उसे बेकार शासन कहा जाता है।

निगमीय शासन की कोई एक सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने कोई वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों के आधार पर निगमीय शासन की अलग-अलग परिभाषाएँ दी है।

1। जेम्स डी वोलफेन्सन - निगमीय शासन का सम्बन्ध निगमीय पारदर्शिता तथा जवाबदेही की व्याख्या है।

2। भारतीय औद्योगिक समूह का निगमीय शासन कोड (1998) - निगमीय शासन विभिन्न कानूनी प्राविधानों व व्यावहारिक की क्षमताओं का औचित्य करता है। पूरे विश्व में आदि निगमीय शासन का एक ही उद्देश्य है कि अंशधारियों के हितों को अधिकतम करना है।

Date ....
Page ....

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20

Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010

नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम शन्तु कुमार सिंह	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर ....
पिता/पति का नाम	वीक्षक का हस्ताक्षर Anjani
सत्र 2019-22 क्लास VI परीक्षा तिथि 19/10/22	सेमेस्टर VI
विषय CC-13 पंजीयन संख्या (Regd. No.)	कुल पूर्णांक 21/24
विश्वविद्यालय रौल नं०	प्राप्तांक ....
	परीक्षक का हस्ताक्षर ....

- यहाँ से दोनों तरफ लिखें -

भाग – I

(1) Both of these

(2) Accountancy begins

(3) Book keeping ends

(4) Compulsory

(5) 139

05

Scanned with OKEN Scanner

भाग - 2

(1) Ans:- अंग्रेजी भाषा का ऑडिट (Audit) शब्द लैटिन भाषा के आडिटे (Audire) से बना है जिसका अर्थ होता है सुनना। प्रारम्भ में अंकेक्षण का कार्य लेखापालकों द्वारा लेखा पुस्तकों में किये गये लेखो को सुनकर ही किया जाता है। उस समय लेखापाल अपने द्वारा किये गये लेखो को किसी अधिकृत व्यक्ति या न्यायधीश के समक्ष पढ़कर सुनाता था और वह न्यायधीश जिसे अंकेक्षक कहा जाता था।

वस्तुत: अंकेक्षण की परिभाषा कुछ ही शब्दों में दिया जाना सम्भव नही है क्योंकि लेखाकर्म के क्षेत्र में विकास के कारण अंकेक्षण की परिभाषा भी समय-समय पर बदलती रही है तथा विभिन्न विद्वानो ने भी समय-समय पर इसकी परिभाषा अपने दृष्टिकोण से दी है जिनमें विभिन्नता पायी जाती है। कुछ प्रमुख विद्वानो की परिभाषाएँ निम्न है।

(1) आर. जी. विलियम्स के शब्दों में " अंकेक्षण से आशय व्यापार की पुस्तकों खातों तथा प्रमाणकों की जाँच से है ताकि यह पता लगाया जा सके कि व्यवसाय का सही तथा उचित चित्र प्रस्तुत करने हेतु चिट्ठा नियमानुकूल बनाया गया है या नही।"

(2) स्०. डब्लू. डैरान के शब्दों में " लेखा पुस्तकों तथा उनके आधार पर निर्मित विवरणो की सत्यता को जानकारी लिए की गयी जाँच अंकेक्षण कहलाती है।

निष्कर्ष के रूप में " अंकेक्षण किसी संस्था की लेखा पुस्तकों की ऐसी विवेचनात्मक जाँच है जोकि एक योग्य निष्पक्ष विवेकशील तथा स्वतन्त्र व्यक्ति

द्वारा प्रमाणकों प्रपत्रों एवं अन्य सूचनाओं के आधार पर की जाती है तथा जिसका मुख्य उद्देश्य ~~यह~~ रिपोर्ट देना होता है।

2 Ans:- लेखाकर्म और अंकेक्षण में निम्नलिखित अन्तर है।

	लेखाकर्म	अंकेक्षण
(1)	यह संस्था के लाभ-हानि व आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए तैयार किया जाता है।	(1) इसका उद्देश्य लाभ हानि एवं आर्थिक स्थिति की शुद्धता का पता लगाना होता है।
(2)	लेखाकर्म वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ पुस्तपालन समाप्त होता है।	(2) अंकेक्षण वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ लेखाकर्म समाप्त होता है।
(3)	लेखाकार अपने तथा पुस्तपालक के कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है।	(3) अंकेक्षक केवल अपने कार्यों के लिए ही उत्तरदायी होता है।
(4)	लेखापाल संस्था का ही कर्मचारी होता है।	(4) अंकेक्षक बाहरी व्यक्ति होता है अर्थात संस्था का कर्मचारी नहीं होता है।
(5)	लेखापाल को नियमित रूप से वेतन दिया जाता है।	(5) अंकेक्षक का पारिश्रमिक अनुबन्ध के आधार पर निर्भर करता है।
(6)	इसका जन्म 1494 ई० में हुआ है।	(6) इसका जन्म 1913 ई० में हुआ है।
(7)	एक लेखापाल अंकेक्षक का काम नहीं कर सकता।	(7) एक अंकेक्षक लेखापाल का काम कर सकता है।
(8)	लेखापाल कोई प्रतिवेदन नहीं देता है।	(8) एक अंकेक्षक कार्य समाप्ति के बाद अपना प्रतिवेदन देता है।

उत्तर- प्रमाणन अंकेक्षण की आधारशिला है, अतः प्रमाणन करते समय अंकेक्षक को बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए प्रमाणन का तात्पर्य केवल लेखा पुस्तकों में की गई प्रविष्टियों को लिखित प्रमाणों जैसे- प्रमाणक प्राप्तियाँ प्राप्ति पुस्तकों की नकलों आदि से मिलान ही नहीं है बल्कि यह भी देखना है कि लेनदेन उचित अधिकारी की अनुमति से हुआ है तथा लेखा पुस्तकों में प्रविष्ट कर दी गयी है।

अंकेक्षक जब अपना कार्य प्रारम्भ करता है तो सबसे पहले उसे प्रारम्भिक लेखा पुस्तकों की जाँच करनी पड़ती है तथा लेखा की पुस्तकों की जाँच करते समय उसे यह देखना होता है कि प्रत्येक लेखा की प्रविष्टि सत्य है तथा पर्याप्त प्रमाणक के आधार पर प्रविष्ट की गयी है। वस्तुतः इसी प्रक्रिया को प्रमाणन कहते हैं।

कुछ विद्वानों ने प्रमाणन की परिभाषाएँ दी है जो इस प्रकार है।—

(1) जे. आर. बाटलीबॉय के शब्दों में "प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकों में लिखे जाने वाले लेखों की सत्यता की जाँच करना प्रमाणन कहलाता है।"

(2) आर्थर डब्ल्यू होम्स के शब्दों में "प्रमाण उपलब्धता या प्रमाणकों की जाँच एवं सत्यापन है जो एक लेनदेन की शुद्धता का समर्थन करते हैं।"

आदर्श परिभाषा के रूप में "प्रमाणन का आशय लेखांकन की पुस्तकों में किए गए लेखों की प्रमाणकों के आधार पर जाँच करना तथा इन प्रमाणकों की भी इस आशय में जाँच करना है कि वे ठीक है या नहीं। इस जाँच का

यह ज्ञात करना है कि पुस्तकों में दिये गये लेखे सत्य उचित एवं अधिकृत है।" 04

6. Ans:- शासन शब्द की जड़ ग्युबरनेट से प्राप्त होती है जिसका अर्थ निर्देशन करना होता है। निगमीय शासन का अर्थ यह है कि उपक्रम को सही दिशा में ले जाना। यह दायित्व कम्पनी की निदेशक मण्डल के पास होता है। अतः शासन अच्छा अथवा बुरा हो सकता है। जब कम्पनी का सिस्टम तथा नियन्त्रण सही दिशा में होता है तथा सभी अंशधारियों के हितों को ध्यान में रखा जाता है तो यह कहा जाता है कि कम्पनी का शासन अच्छा है परन्तु यदि कम्पनी का सिस्टम गलत दिशा में जा रहा है अथवा कोई कमी है तो उसे बेकार शासन कहा जाता है।

निगमीय शासन की कोई एक सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने कई वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों के आधार पर निगमीय शासन की अलग-अलग परिभाषाएँ दी है।

(1) जेम्स डी वेलफेन्सन – निगमीय शासन का सम्बन्ध निगमीय पारदर्शिता तथा जवाबदेहता को बढ़ाना है।

(2) भारतीय उद्योग औद्योगिक समूह का निगमीय शासन कोड (1998) – निगमीय शासन विभिन्न कानूनों प्रक्रियाओं व्यवहारों तथा नियमों के सब पक्ष है जो कम्पनी की क्षमताओं का आंकलन

करना है। पूरे विश्व में अच्छे वित्तीय प्रबन्ध का एक ही उद्देश्य है कि अंशधारियों के कल्याण को अधिकतम करना है।

05

Scanned with OKEN Scanner

Internal Test Exam

…ms-VI — Full marks - 25

Paper- DSE-IV — Time - 1 (Hours)

Sub - Fundamentals of Investment

भाग-I — 5×1=5

1. निवेश का तात्पर्य है :-
(अ) राष्ट्रीय पूँजी स्टॉक मे शुद्ध वृद्धि (ब) व्यक्ति का एक घर खरीदना
(स) प्रत्याय प्राप्ति के लिए सम्पत्तियों या कोष का निवेश (द) वस्तुओं एवं सेवाओं में कोष का निवेश

2. जीरो कूपन बॉण्ड का विकास हुआ -
(अ) यू.एस.ए. प्रतिभूति बाजार में (ब) वाल स्ट्रीट में (स) जापान के प्रतिभूति मार्केट में (द) दलाल स्ट्रीट में।

3. मकान सम्पत्ति में निवेश एक-
(अ) वित्तीय निवेश है (ब) आर्थिक निवेश है (स) गैर-पारम्परिक वित्तीय निवेश है (द) गैर वित्तीय निवेश है।

4. निम्न में से कौन सी मुद्रा बाजार प्रतिभूति नहीं है?
(अ) ट्रेजरी बिल (ब) राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र (स) जमा प्रमाण पत्र (द) वाणिज्यिक पेपर

5. वर्तमान में अंश का सममूल्य है -
(अ) निश्चित (ब) परिवर्तनशील (स) 10 के बराबर (द) 5 के बराबर

भाग-II — 5×4=20

1. Compute the current Ratio form the fallowing:-
Cash - 20000, Investments - 40000, B/R - 12000, Book debts Less Reserve - 8000
Inventories - 88000, Prepaid exp - 10000
Sundry creditors - 30000, O/S Exp - 4000, B/P - 16000, Income Tax Pay - 30[illegible]
Bank overdraft - 70000

2. Compute the Gross Profit Ratio from the fallowing Particulers:
Opening Stock - 50000, Purchases - 160000, Closing Stock - 70000
Purchases Returns - 4000, Sales - 210000, Sales Return - 10000

3. What is technical analysis?
तकनीकी विश्लेषण क्या है।

4. विनियोग क्या है?
What is Investment?

5. पूँजी बाजार क्या है?
What is capital Market?

Scanned with OKEN Scanner

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20   Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD: 2010   नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम Danish Ansari	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर
पिता/पति का नाम Ayub Ansari	वीक्षक का हस्ताक्षर Ansari
सत्र 2019-22 क्लास B.Com परीक्षा तिथि 19/10/22	सेमेस्टर
विषय OSS-IV पंजीयन संख्या (Regd. No.) NPU/A/893/19	कुल पूर्णांक
विश्वविद्यालय रौल नं. 05	प्राप्तांक 22/25
	परीक्षक का हस्ताक्षर

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

Scanned with OKEN Scanner

भाग – I

1. प्रत्याशा ~~प्रत्यय~~ प्रदित के लिए समर्थनी में
क्रेता का ~~वि~~ निविदा

2. ई० एस० ओ० प्रति भूमि ~~व~~ बाजार में

3. और बीमित निवेश है।

4. राशियों व क्रमांत प्रमाण पत्र

5. परिवर्तनशील नीति

(03)

भाग II

1 Ans. Current Ratio = Current Assets / Current Liabilities

$= \frac{250000}{150000}$

$= 5:3$

$= 1.67:1$ Ans.

(05)

(2) Cost of goods sold = O.S + Net Purchases − C.S

= 50000 + (160000 − 4000) − 70000

= 50000 + 156000 − 70000

= 206000 − 70000

= 136000

Gross Profit = Net Sales − Cost of goods sold

=> (210000 − 10000) − 136000

=> 200000 − 136000

=> 64000

Gross Profit Ratio = Gross Profit / Net Sales × 100

=> $\frac{64000}{200000} \times 100$

=> 32% Ans.

(05)

Scanned with OKEN Scanner

4 Ans. विनियोग का करना एक व्यापार किया है। यह
प्रतिविनियोग है आवश्यक लोगों को अपनी तरफ
आकर्षित है जिनके पास धन बचाने का और
साधन है। अर्थात जो बचत कर सकता है।
निवेश एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके
अन्तर्गत निवेशक अपने धन को विभिन्न
सम्पत्तियों एवं प्रतिभूतियों में निवेश करता है।
विनियोग आर्थिक में आय प्राप्ति के उद्देश्य से
किया जाता है जोकि ब्याज, लाभांश और पूंजी
अथवा पूंजी वृद्धि के रूप में हो सकती है।
विनियोग अपने विशेषज्ञों द्वारा हो सकती है।
विनियोग अपनी विशेषता द्वारा विभिन्न
अर्थों में परिभाषित किया गया है। लेकिन
एक साधारण व्यक्ति के व्यवहार से देखें तो
विनियोग प्रकार सम्पत्ति में लगाया गया पैसा है।
उदाहरण के लिए एक व्यक्ति रहने के लिए
मकान खरीदता है। इस स्थिति में यह
निवेश नहीं है। क्योंकि इस विनियोग से नियमित
आय प्राप्त नहीं रही है। एक अर्थशास्त्री
के व्यवहार से विनियोग से अभिप्राय
राष्ट्र के पूंजी स्टॉक में शुद्ध वृद्धि से है।
इसके वस्तुएं एवं सेवाएं शामिल है जोकि
उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग की जाती है। और
पूंजी स्टॉक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन
में योगदान देता है।

विनियोग की परिभाषाएं

1. Sharpe / Alexander – " Sacrifice of certain present value for some uncertain future value".

2. F. Amling – " Purchase of financial asset that produces a yield that is proportional to the risk assumed over some future investment period.

उपरोक्त शब्दों में विनियोग का
उद्देश्य जोखिम को उठा तथा निश्चित पर्याप्त
करके उसके पूंजी मूल्य में वृद्धि करना है जो
इस बात पर निर्भर करता है कि विनियोग दीर्घकालीन
अथवा अल्पकालीन के लिए है तथा वह नीतिगत
प्रकृति का जोखिम रहित विनियोग है।

(04)

5 Ans. स्टॉक मूल्य के दोनों रूपों इनमें की तुलना को
इन परिस्थितियों में विश्लेषित किया जा सकता है –
आधारभूत विश्लेषण तथा तकनीकी विश्लेषण। आधारभूत
विश्लेषण की सहायता से स्टॉक मूल्य को
निर्धारित करने वाले कारकों को आर्थिक उद्योग
के आधार पर किया जाता है। यदि स्टॉक की
इसकी वास्तविक मूल्य से कम है तो निवेशक स्टॉक
क्रय करता है जबकि विपरीत स्थिति में बेचता
है अर्थात यदि कीमत कम आती है तो निवेशक
उसका क्रय करता है तथा कीमत में वृद्धि होने
पर उसे बेच देता है लेकिन तकनीकी विश्लेषण
[illegible] मूल्य रूप के [illegible] आधार पर

जाता है।

तकनीकी विश्लेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत अंशों के क्रय विक्रय की व्यूहरचना तैयार की जाती है। विभिन्न सूचकों की सहायता से कीमत मात्रा तथा माँग एवं पूर्ति में आपसी संबंध का विश्लेषण किया जाता है। इस तरह का विश्लेषण कम्पनी के लिए व्यक्तिगत स्टॉक तथा सम्पूर्ण स्टॉक बाजार को ध्यान में रखा जाता है। यदि बाजार ऊपर उठता है तो परिणाम को अनुकूल माना जाता है अर्थात अधिक संख्या में अंशों का व्यवहार किया जाता है। तकनीकी विश्लेषण के अनुसार कम्पनी की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना सम्भव नहीं है जैसा कि आधारभूत विश्लेषण में किया जाता है। इसके अनुसार स्टॉक कीमतें निम्न प्रकार निर्धारित की जाती है।

1. प्रतिभूतियों की कीमतें बाजार में उनकी माँग एवं पूर्ति द्वारा निर्धारित होती हैं न की कम्पनी विशेष की वित्तीय स्थिति द्वारा।

2. तकनीकी विश्लेषण एक ऐसी विधि है जिसके अन्तर्गत पिछले वर्षों के वित्तीय आँकड़ों के अध्ययन से अंशों की कीमतों की प्रवृत्ति का अनुमान लगाया जाता है।

03

Date ____
Page ____

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20__ SI. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD: 2010 नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम RAHUL KUMAR	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर Rahul Kumar
पिता/पति का नाम RAJENDRA RAM	वीक्षक का हस्ताक्षर [illegible]
सत्र 2019-22 क्लास Sem-V परीक्षा तिथि 17/10/22	सेमेस्टर
विषय [illegible] पंजीयन संख्या (Regd. No.) NPU/17890/19	कुल पूर्णांक
विश्वविद्यालय रौल नं० 02	प्राप्तांक 21/25
	परीक्षक का हस्ताक्षर

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

(1) Ans प्रत्याय प्राप्ति के लिए सम्पत्तियों में कोष का निवेश।

(2) Ans – यू० एस० प्रतिभूति बाजार में

(3) Ans गैर वित्तीय निवेश है।

(4) Ans – राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र (05)

(5) Ans – परिवर्तन शील

भाग - 2

(1) Ans— current Ratio

$$= \frac{\text{current Assets}}{\text{current liabilities}}$$

$$= \frac{5\,250000}{\,3\,150000}$$

5 : 3 $\frac{5}{3}$ 1.67 Ans

OS

(2) Cost of goods sold = ~~O.S + Net pu~~

O.S + Net purches − C.S

50000 + (160000 − 4000) − 70000

206000 − 70000

136000

Gross profit = Net sales − cost of goods sold

(210000 − 10000) − 136000

200000 − 136000

~~64000~~ Ans = 64000

Gross profit Ratio = $\frac{\text{Gross profit}}{\text{Net sales}} \times 100$

OS

$$\frac{\overset{32}{\cancel{64000}}}{\cancel{200000}} \times \cancel{100}$$

= 32 % Ans

(4) उत्तर -
विनियोग करना एक रुचिकर क्रिया है क्योंकि यह इनसानी लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करती है जिनको पास बचत करने का सामर्थ्य है अर्थात जो बचत कर सकता है निवेश एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत निवेशक अपने फण्ड को विभिन्न सम्पत्तियों एवं प्रतिभूतियों में विवेश करता है विनियोग भविष्य में आय प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाता है जो कि ब्याज लाभांश प्रीमियम अथवा पूंजी वृद्धि के रूप में हो सकती है विनियोग अपने

विनियोग की परिभाषाएं

(1) Sharpe/ Alexander - sacrifice of certain presents value for some uncertain future value

(2) F. Amling - "purchase of financial Asset that produces a yield that is proportional to the

03

(3) उत्तर -
स्टॉक मूल्य में होने वाली हलचल को मुख्यतः दो दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया जा सकता है
आधारभूत दृष्टिकोण के अन्तर्गत स्टॉक मूल्य का विश्लेषण कम्पनी के इनतम्सी A आर्थिक दशा के आधार पर किया जाता है यदि स्टॉक मूल्य इसके वास्तविक मूल्य से कम है तो निवेशक स्टॉक क्रय करता है
दूसरा दिया में अंशों जबकि विपरीत को बेचता है अर्थात यदि कीमत में कमी आती है तो वे निवेशक अंश क्रय करता है तथा कीमत में वृद्धि होने

पर इन्हें बेच देते हैं
लेकिन तकनीकी विश्लेषण मुख्य रूप से स्टॉक बाजार का अध्ययन करते हैं।

तकनीकी विश्लेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत अंशों के क्रय विक्रय की रूपरेखा तैयार की जाती है विभिन्न सूचकों की सहायता से कीमत मात्रा तथा माँग एवं पूर्ति में आपसी सम्बन्ध का विश्लेषण किया जाता है।

03

1) प्रतिभूतियों की निर्धारित होता है उनकी कम्पनी विशेष की विश्लेषण होता है

2) तकनीकी विश्लेषण एक ऐसी विधि है जिसके अंतर्गत पिछले वर्षों के वित्तीय आंकड़ों के अध्ययन से अंशों की कीमतों का अनुमान लगाया जाता है।

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20 Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

लरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD: 2010 नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम दिनेश कुमार

पिता/पति का नाम चन्द्रिका महतो

सत्र 2019-22 क्लास B.Com परीक्षा तिथि 13/10/20

विषय CSE - IV पंजीयन संख्या (Regd. No.) NPU/178914/19

विश्वविद्यालय रौल नं. 01

परीक्षार्थी का हस्ताक्षर Dinesh kumar

वीक्षक का हस्ताक्षर

सेमेस्टर VI

कुल पूर्णांक

प्राप्तांक 9/25

परीक्षक का हस्ताक्षर

- यहाँ से दोनों तरफ लिखें -

भाग - 1

(1) Ans प्रत्यय प्राप्ति के लिए सम्पत्तियों में कोष का विनिय

(2) Ans:- प्र: स्व. प्रतिभूति बाजार में

(3) Ans: ओर निविष्ट विनेश को

(4) Ans.- राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र

05

(5) Ans. परिवर्तन शील

भाग - 2

(1) Ans. Current Ratio

$= \frac{\text{Current } \sout{\text{Ratio}} \text{ Assets}}{\text{Current Liablites}}$

$= \frac{250000}{150000} = \frac{5}{3}$

= 5 : 3 = $\frac{5}{3}$ = 1.67

05

(2) Cost of goods Sld

= O.S + Net Purchas - C.S

=> 50000 + (160000 - 4000) - 70000

=> 206000 - 70000

=> 136000

Gross Profit = Net Sales - Cost of goods

(210000 - 10000) - 136000

200000 - 136000

64000

Gross Profit Ratio = $\frac{\text{Gross Profit}}{\text{Net Sales}} \times 100$

05

$= \frac{64000}{200000} \times 100$ = 32

32 % Ans

Scanned with OKEN Scanner

(4) उधार विनियोग करना एक
[illegible] किया जाता है
[illegible] यह उधारी [illegible]
क्योंकि [illegible]
के [illegible] तरह [illegible]
करते है जिनके पास [illegible]
करने का [illegible] है
[illegible] को [illegible] कर [illegible]
निवेश [illegible] ऐसी [illegible]
के [illegible] अनुदान निवेश के
साधन [illegible] का [illegible]
[illegible] से [illegible] के
निवेश करना है विनियोग
[illegible] से [illegible] के
[illegible] को [illegible] है
[illegible]
[illegible] को [illegible]
[illegible] के विनियोग
साथ विनियोग की परिभाषाएँ

(a) Show/ Alexander Sacalie
of Certain Presents Vale
for Some Success Refer
value

विभिन्न सूचकों की सहायता से
अतीत द्वारा तथ्य ज्ञात एवं
वृद्धि में उपयुक्त समन्वय
का विश्लेषण किया जाता है।

(ii) प्रवृत्तियों को निर्धारित होने के
कारणों विरोध को विश्लेषण
करते हैं

(iii) सांख्यिकी विश्लेषण एक ऐसी
विधि है जिसको अतीत
निश्चल वर्षों के विभिन्न
आंकड़ों के अध्ययन से भावी
की प्रवृत्ति का अनुमान
लगाया जाता है।

93

Date ______
Page ______

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20 Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010 नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम शहबाज अनवर	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर Shahbaz Anwar
पिता/पति का नाम सज्जाद अहमद	वीक्षक का हस्ताक्षर [illegible]
सत्र 2019-2022 क्लास B.Com परीक्षा तिथि 19/10/23	सेमेस्टर
विषय DSE-IV पंजीयन संख्या (Regd. No.) NPU/17899/19	कुल पूर्णांक
विश्वविद्यालय रौल नं० 20008080 0860	प्राप्तांक 22/25
	परीक्षक का हस्ताक्षर

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

भाग I

(1) Ans प्रत्याय प्राप्ति के लिए समितियो मे कोष का निवेश

2 Ans यू० एस० प्रतिभूति बजार मे

(3) Ans गैर वितिय निवेश है

(4) Ans राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र

(5) Ans परिवर्तन शील। 05

इकाई - II

(1) Ans Current Ratio = Current Asset / Current Liabilities

$\Rightarrow \frac{250000}{150000}$
3
= 513
= 1.6711 Ans

(2) Ans Cost of goods sold = O.S + Net purchase − C.S
= 50000 + (160000 − 4000) − 70000
= 50000 + 156000 − 70000
= 206000 − 70000
= 136000

Gross profit = Net Sales − (Cost of goods sold)
⇒ (210000 − 10000) − 136000
⇒ 200000 − 136000
= 34000

Gross profit Ratio = Gross profit × 100 / Net Sales

$\Rightarrow \frac{640000}{200000} \times 100$
⇒ 32% Ans

(3) Ans In finance, technical analysis is an analysis methodology for analysing and forecasting the direction of prices through the study of paste market data, primarily prices and volume, Behavioral economics and quantitative analysis use many of the same tools of technical analysis which being an aspect of active management, stand in contradiction to much of modern portfolio theory. The efficacy of both technical and fundamental analysis is dispbted by the efficient-market hypothesis, which state that stock market prices are essentially unpredictable and research on whether technical analysis offers any benefit has produced mixed results.

(4) Ans Cost of Capital is the minimum rate of return or profit a company mu[st] earn before genrating value. It's Calculated by a bussiness accou[nt] department to determine financial risk and whether an investment is ju[stified]. Company leaders use Cost of Capital gauge how much money new endeavo[rs] need to generated to offset up costs and achive profit. They also

Date ______
Page ______

to analyse the potential risk of future business decisions.

Cost of Capital is extremely important to investors and analysts. They group use it to determine stock prices and potential returns from acquired shares. For example, if a a company's financial statements or cost of capital are volatile, cost of shares may plummet; as a result investors may not provide financial backing.

03

Scanned with OKEN Scanner

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20

सुखदे

Date
Page

Date
Page

Sl. No.

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

ESTD : 2010

नाम ..... शान्तु कुमार सिंह	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर .....
पिता/पति का नाम	वीक्षक का हस्ताक्षर ..... Arpan .....
सत्र ..... 2019-22 ..... क्लास ..... VI ..... परीक्षा तिथि 19/10/22	सेमेस्टर ..... VI .....
विषय ..... DSE-4 ..... पंजीयन संख्या (Regd. No.)	कुल पूर्णांक .....
विश्वविद्यालय रौल नं०	प्राप्तांक ..... 23/25 .....
	परीक्षक का हस्ताक्षर .....

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

Scanned with OKEN Scanner

Date
Page

भाग - I

(1) प्रत्याय प्राप्ति के लिए सम्पत्तियों में कोष का निवेश

(2) पु० एस० प्रतिभूति बाजार में

(3) गैर वित्तीय निवेश है।

(4) राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र

(5) परिवर्तनशील

05

Scanned with OKEN Scanner

(2) Cost of goods sold = O.S + Net Purchases − C.S

$= 50000 + (160000 - 4000) - 70000$

$= 50000 + 156000 - 70000$

$= 206000 - 70000$

$= 136000$

Gross Profit = Net sales − Cost of goods sold

$\Rightarrow (210000 - 10000) - 136000$

$\Rightarrow 200000 - 136000$

$\Rightarrow 84000$

Gross Profit Ratio = $\frac{\text{Gross Profit}}{\text{Net sales}} \times 100$

$\Rightarrow \frac{64000}{200000} \times 100$ (32)

$\Rightarrow 32\%$ Ans

05

risk assumed over some future investment period"

साधारण शब्दों में "विनियोग का उद्देश्य कोषों को उच्च तथा निम्न दर पर सुरक्षा करके उसके मूल्य में वृद्धि करता है जो इस बात पर निर्भर करता है कि विनियोग दीर्घकाल अथवा अल्पकाल के लिए है तथा यह जोखिम पूर्ण या जोखिम रहित विनियोग है।" 04

3 Ans: - स्टॉक मूल्य में होने वाली हलचल को मुख्यत: दो दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया जा सकता है- आधारभूत दृष्टिकोण तथा तकनीकी दृष्टिकोण। आधारभूत दृष्टिकोण के अन्तर्गत स्टॉक मूल्य का विश्लेषण कम्पनी व इण्डस्ट्री की आर्थिक दशा के आधार पर किया जाता है। यदि स्टॉक का मूल्य इसके वास्तविक मूल्य से कम है तो निवेशक स्टॉक क्रय करता है जबकि विपरीत दिशा में अंशों को बेचता है अर्थात यदि कीमत में कमी आती है तो निवेशक अंश क्रय करता है तथा कीमत में वृद्धि होने पर इन्हें बेच देता है लेकिन तकनीकी विश्लेषक मुख्य रूप से स्टॉक बाजार का अध्ययन करते है।

तकनीकी विश्लेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत अंशों के क्रय विक्रय की व्यूहरचना तैयार की जाती है। विभिन्न सूचकों की सहायता से कीमत मात्रा तथा माँग एवं पूर्ति में आपसी सम्बन्ध का विश्लेषण किया जाता है। इस

Internal Test Exam

Sems - VI

Paper - CC-14

Sub - Financial management

Full marks - 25

Time - I (Hours)

भाग - I

5×1=5

1) Dividened decision is related to:-
(i) Right issue of shares (ii) Reinvestment requirement
(iii) cash flow statement (iv) None of above.

2) Saving in respect of a cost is treated in capital budgeting as:
(i) An inflow (ii) An outflow (iii) Nil (iv) None of these.

3) Fund Flow Statement highlights:-
(i) sources of Funds (ii) Application of Funds
(iii) Sources and Application of Funds (iv) None of the above.

4) Which is included in Total Inventory Cost:-
(i) material cost (ii) ordering cost
(iii) carrying cost (iv) All of these

5) Strict credit policy results in:-
(i) Increasing sales (ii) Decreasing sales
(iii) Increasing Bad Debts (iv) None of these.

भाग - II

5×4=20

1) Calculate economic order quantity from the fallowing Informat
Annual Requirements 1440 units, ordering cost ₹ 15 Per order Per Year, Purchase price ₹ 10 Per unit, Holding cost 12% Per Year

2) Credit Sales of company (Year 2016) - 400000
Receivables (1.1.2016) - 43000
Receivables (31.12.2016) - 29000
Suppose 360 days in a Year. Calculate average Period or Rea

3) The fallowing data are avaiable in respect of a company
Equity share capital (Dividend into shares of ₹ 10 each) - 50,00
Debentures (14%) - 25,00,000
Earnings before Interest & Tax (EBIT) - 15,00,000
You are required to calculate the financial Leverage of the company.

4) Meaning of cost capital.
पूँजी की लागत का अर्थ को क्या समझाते है।

5) Meaning of capital Budgeting.
पूंजी बजटिंग का अर्थ स्पष्ट करें।

Scanned with OKEN Scanner

Date ________
Page ________

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20

Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010

नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर ....
पिता/पति का नाम	वीक्षक का हस्ताक्षर ....
सत्र 2019-22 क्लास VI परीक्षा तिथि 19.10.22	सेमेस्टर VI
विषय CC-14 पंजीयन संख्या (Regd. No.)	कुल पूर्णांक ....
विश्वविद्यालय रौल नं.	प्राप्तांक 24/25
	परीक्षक का हस्ताक्षर ....

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

भाग-I

(1) Reinvestment requirement

(2) An Inflow

(3) Sources and Application of funds.

(4) All of these.

(5) Decreasing sales.

05

भाग-2

(1) Ans:-

R = 1440

Cp = 15

CH = 12%

P = 10

$$EOQ = \sqrt{\frac{2 \times R \times Cp}{CH}}$$

$$= \sqrt{\frac{2 \times 1440 \times 15}{12}}$$

$$= \sqrt{\frac{43200}{12}}$$

$$= \sqrt{3600}$$

= 60 units Ans

05

Scanned with OKEN Scanner

9 Ans:

Average Period of Receivables:—

$= \frac{\text{Accounts Receivables}}{\text{Credit Sales}}$ × ~~No of W.B~~

$\Rightarrow \frac{36000}{400000} \times 360$

= 32.4 Days

Average Accounts Receivables = $\frac{43000 + 29000}{2}$

$= \frac{72000}{2}$

= 36000 Ans:

OS

3 Ans:

$FL = \frac{EBIT}{PBT}$

$= \frac{1500000}{1150000}$

= 1:3

Profit before Tax = EBIT − Interest

= 1500000 − 350000

= 11,50,000

FL − Financial Leverage

EBIT − Earnings before Interest & Tax

P.B.T = Profit before Tax

OS

5 Ans:- पूँजी बजटिंग का सम्बन्ध दीर्घकालीन पूँजीगत खर्चों के बारे में निर्णय करने से है। यह नई अथवा विद्यमान परियोजनाओं पर पूँजीगत खर्चों की दीर्घकालीन योजना है जिसका फर्म को भविष्य में लाभ मिलता है। यह दीर्घकालीन अथवा स्थायी सम्पत्तियों में विनियोग सम्बन्धी निर्णय करने की तकनीक है। इस प्रकार से पूँजी बजटिंग का सम्बन्ध पूँजीगत खर्चों के विकल्पों की पहचान चयन निर्माण की सम्पूर्ण प्रक्रिया से है।

जे हैम्पटन जॉन के अनुसार!- "पूँजी बजटिंग पूँजी के निवेश एवं अधिप्राप्ति के लिए फर्मों की एक औपचारिक प्रक्रिया है।

मिल्टन एच स्पेंसर के अनुसार - "पूँजी बजटिंग में सम्पत्तियों के लिए व्ययों को शामिल किया जाता है जिसका लाभ भावी समय अवधि में प्राप्त होता है।

अतः पूँजी बजटिंग निर्णयों का सम्बन्ध उन दीर्घकालीन सम्पत्तियों से है जिनसे भविष्य में फर्म को आय प्राप्त होती है। यह आय अथवा लाभ बिक्री में वृद्धि अथवा कम लागत के रूप में हो सकती है। पूँजी बजटिंग निर्णयों में स्थायी सम्पत्तियों की अधिप्राप्ति पुरानी सम्पत्ति की जगह पर स्थायी सम्पत्ति को शामिल करना है।

उपर्युक्त वर्णन से पूँजीगत खर्चों से सम्बन्धित निर्णयों के निम्नलिखित लक्षण है।

(1) भावी लाभों की उम्मीद में स्थायी सम्पत्तियों में निवेश किया जाता है।
(2) निवेश दीर्घकालीन अथवा स्थायी सम्पत्तियों में किया जाता है।
(3) निवेश से फर्म को आगे कई वर्षों तक लाभ मिलता है।
(4) पूँजीगत खर्चों से सम्बन्धित निर्णय अधिक जोखिम पूर्ण होते हैं।

04

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20

Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010 नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम .... निशान्त सम्राट	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर ....
पिता/पति का नाम .... रविन्द्र प्रसाद	वीक्षक का हस्ताक्षर .... Anjani
सत्र .... क्लास .... परीक्षा तिथि 19/10/22	सेमेस्टर VI
विषय CC-14 पंजीयन संख्या (Regd. No.)	कुल पूर्णांक 25
विश्वविद्यालय रौल नं०	प्राप्तांक 24
	परीक्षक का हस्ताक्षर ....

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

गुप्त – 2

1) Economic order Quantity = ?

$$EOQ = \sqrt{\frac{2 \times R \times O}{CH}}$$

$$= \sqrt{\frac{2 \times 1440 \times 15}{12}}$$

$$= \sqrt{\frac{43,200}{12}}$$

$$= \sqrt{3600}$$

= 60 units Ans

03

2) Ans: Credit sales of company = 4,00,000
Recievables (1/1/16) 43,000
Recievables (31/12/16) 29,000

Avg period of Receivables —

⇒ $\frac{\text{Account receivables}}{\text{credit sales}} \times$ No of W.D

⇒ $\frac{36,000}{4,00,000} \times 360$

= 32.4 days.

Avg period receivables = $\frac{43,000 + 29,000}{2}$

= $\frac{72,000}{2}$

05 — 36,000.

3) Ans: FL = $\frac{EBIT}{PBT}$

= $\frac{15,00,000}{11,50000}$

= 1:3

Profit before Tax = EBIT − Interest

= 1500000 − 350,000
= 11,50,000

FL − Financial leverage

EBIT − Earnings before Interest & Tax

05 P.B.T = Profit before Tax.

5) Ans: पूंजी बजटिंग का सम्बन्ध दीर्घकालीन पूंजीगत खातों के बारे में निर्णय करने से है। यह नये अथवा विद्यमान पोर्टफोलियो में पूंजीगत खातों की विधी का लाभ योजना है जिसका फर्म को कविष्य से लाभ मिलता है। यह दीर्घकालीन अथवा स्थायी सम्पत्तियों में विनियोग सम्बन्धी निर्णय करने की तकनिक है। इस प्रकार से पूंजी बजटिंग का सम्बंध पूंजीगत खर्चों के विकल्पों की पहचान चयन निर्माण की सम्पूर्ण प्रक्रिया से है।

जे हैम्पटन जॉन के अनुसार :- " पूंजी बजटिंग से सम्पतियों के लिए खर्चों को शामिल किया जाता है जिसका लाभ काफी समय अवधि में प्राप्त होता है।

अतः पूंजी बजटिंग निर्णयों का सम्बन्ध उन दीर्घकालीन सम्पतियों से है जिनसे भविष्य में फर्म को आय प्राप्त होती है। यह आय अथवा लाभ बिक्री में वृद्धि अथवा फर्म कम लागत के रूप में हो सकती है। पूंजी बजटिंग निर्णयों में

स्थायी सम्पत्तियों का अधिप्राप्ति पुरानी सम्पती की जगह पर स्वयं नयी सम्पती को शामिल करना है।

उपर्युक्त वर्णन से पूंजीगत खर्चे से सम्बंधित निर्णयों के निम्नलिखित लक्षण हैं।

1) भावी लाभों की उम्मीद से स्थायी सम्पत्तियों में निवेश किया जाता है।

2) निवेश दीर्घकालिन अथवा स्थायी सम्पत्तियों में किया जाता है।

3) निवेश से फर्म को आगे कई वर्षों तक लाभ मिलता है।

4) पूंजीगत खर्चों से सम्बन्धित निर्णय अधिक जोखिम पूर्ण होते हैं।

04

भाग - 1

1) Reinvestment requirement

2) An inflow

3) Sources and Application of funds.

4) All of these

5) Decreasing sales.

05

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20__ Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

नावाडीह, पलामू (झारखण्ड)

ESTD. 2010 नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम [illegible]	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर [illegible]
पिता/पति का नाम [illegible]	वीक्षक का हस्ताक्षर [illegible]
सत्र 2019-2022 कक्षा [illegible] परीक्षा तिथि [illegible]	सेमेस्टर
विषय CC-14 पंजीयन संख्या (Regd. No.) [illegible]	पूरक पुस्तिका
विश्वविद्यालय रोल नं. [illegible]	प्राप्तांक [illegible]
	परीक्षक का हस्ताक्षर [illegible]

– यहीं से दोनों तरफ लिखें –

प्रश्न - I

(1) Ans Economic Reinvestment requirement

2 Ans An inflow

(3) Ans Sources and Application

4 Ans All of these

(5) Ans Decreasing Sales

05

(9) Credit Sales of Company : 400,000
Receivables (1/1/10) 43,000
Receivables (31/12/16) 29,000

Avg Period of Receivables —

⇒ $\frac{\text{Account Receivable} \times \text{No. of W.D}}{\text{Credit Sales}}$

⇒ $\frac{36,000}{400,000} \times 360$

⇒ 32.4 days

Avg period Receivable $\frac{43,000 + 29,000}{2}$

$= \frac{72,000}{2}$

OS

$= 36,000$

Economic order quantity ?

$EOQ = \sqrt{\frac{2 \times R \times CP}{CH}}$

$= \sqrt{\frac{2 \times 1440 \times 15}{12}}$

$= \sqrt{\frac{43200}{12}}$

$= \sqrt{3600}$

= 60 units Ans.

OS

Ans FL = $\frac{EBIT}{PBT}$

$= \frac{1500000}{1150000}$

= 1 : 3

Profit before Tax = EBIT − Interest
= 1500000 − 350000
= 11,50,000

FL — Financial Leverage

EBIT : Earnings before Interest & Tax

P.B.T = Profit before Tax

OS

(5) Ans Capital budgeting is the process a business undertakes to evaluate potential major projects or investments. Construction of a new plant or a big investment in an outside venture are examples of projects that would require capital budgeting before they are approved or rejected. As part of capital budgeting, a company might assess a prospective project's lifetime cash inflows and outflows to determine whether the potential returns that would be generated meet a sufficient process is also known as investment appraisal.

Key Takeaways

(i) Capital budgeting is used by companies to evaluate major projects and investments, such as new plants or equipment.

(ii) The process involves analyzing a project's cash inflows and outflows to determine whether the expected return meets a set benchmark.

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20

Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010

नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम: दिनेश कुमार

पिता/पति का नाम: चंद्रिका महतो

सत्र: 2019-22 क्लास: B.Com परीक्षा तिथि: 19/10/2021

विषय: CC-14 पंजीयन संख्या (Regd. No.): NPU/17894/19

विश्वविद्यालय रौल नं०: 20008080855

परीक्षार्थी का हस्ताक्षर: Dinesh kumar

वीक्षक का हस्ताक्षर: Aman

सेमेस्टर: VI

कुल पूर्णांक: 25

प्राप्तांक: 5

परीक्षक का हस्ताक्षर:

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

भाग – 1

(1) Reinvestment xdv irement

(2) An inflow

(3) Source and Application of funds.

(4) All of these

(5) Decreasing Sales

05

प्र. 2

(1) Ans:- $R = 1440$

$CP = 15$

$CH = 12\%$

$P = 10$

$EOQ = \sqrt{\frac{2 \times R \times CP}{CH}}$

$= \sqrt{\frac{2 \times 1440 \times 15}{12}}$

$= \sqrt{\frac{43200}{12}}$

$= \sqrt{3600}$

$= 60$ units Ans

04

(2) Ans: Average Period of Receivables

$\Rightarrow \frac{\text{Accounts Receivables}}{\text{Credit Sales}} \times \text{No of w.D}$

$\Rightarrow \frac{36000}{400000} \times 360$

$\Rightarrow$ 32.4 Days

Average Accounts Receivables =

$\frac{43000 + 29000}{2}$

$\Rightarrow \frac{72000}{2}$

$\Rightarrow$ 36000 Ans

05

(3) Ans $F_L = \frac{EBIT}{PBT}$

$= \frac{1500000}{1150000}$

$= 1.3$

profit befor tax = EBIT - Interest

= 1500000 - 350000

= 11,50,000

FL - Financial Leverage

EBIT - Earnings befor Interest st at

P.B.T = profit before tax

04

Scanned with OKEN Scanner

अत: पूंजी बजटिंग निर्णयों का सम्बन्ध उन दीर्घकालीन सम्पत्तियों से है जिनसे भविष्य में फर्म को आय प्राप्त होती है यह आय अथवा लाभ बिक्री में वृद्धि अथवा कम लागत के रूप में हो सकती है पूंजी बजटिंग निर्णयों में स्थायी सम्पत्तियों की अधिप्राप्ति पुरानी सम्पत्ति की जगह नयी सम्पत्ति को शामिल करना है।

उपर्युक्त वर्णन से पूंजीगत खर्चे से सम्बन्धित निर्णयों के निम्नलिखित लक्षण है

(1) भावी लाभों की उम्मीद में स्थायी सम्पत्तियों में निवेश किया जाता है।

(2) निवेश दीर्घकालीन अथवा स्थायी सम्पत्तियों में किया जाता है

(3) निवेश से कि फर्म को आगे कई वर्षों तक लाभ मिलता है।

(4) पूँजीगत खर्चों से सम्बन्धित निर्णय अधिक जोखिम पूर्ण होते है

ok

Scanned with OKEN Scanner

Date
Page

MID SEMESTER EXAM, YEAR 20 Sl. No. -

सुखदेव सहाय-मधेश्वर सहाय डिग्री कॉलेज

तरहसी, पलामू (झारखण्ड)

ESTD : 2010

नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर से सम्बद्ध इकाई

नाम Danish Ansari	परीक्षार्थी का हस्ताक्षर
पिता/पति का नाम Ayub Ansari	वीक्षक का हस्ताक्षर Ansari
सत्र 2019-22 क्लास B.Com. VI परीक्षा तिथि 19/10/22	सेमेस्टर
विषय CC-14 पंजीयन संख्या (Regd. No.) NPU/17893/19	कुल पूर्णांक 16/25
विश्वविद्यालय रौल नं० -09	प्राप्तांक
	परीक्षक का हस्ताक्षर

– यहाँ से दोनों तरफ लिखें –

भाग-J.

Economic order quantity.

$$EOQ = \sqrt{\frac{2 \times R \times CP}{CH}}$$

$$= \sqrt{\frac{2 \times 1440 \times 15}{12}}$$

$$= \sqrt{\frac{43200}{12}}$$

$$= \sqrt{3600}$$

= 60 unit Ans.

05

Q) Credit Sales of company - 400000
Receivables (1/1/16) - 45000
Receivables (31/12/16) - 29000

Avg. Period of Receivables
=> Account Receivables × No. of days / Credit Sales

= 36000 / 400000 × 360

=> 32.4 days

Avg. Period Receivables = (45,000 + 29,000) / 2

= 72000 / 2

= 36000

04

3. FL = EBIT / EBT

= 1500000 / 1150000

= 1.3

04

FL - Financial Leverage.
EBIT - Earnings before Interest & Tax
P.B.T. Profit before Tax.

Q) पूँजी बजटिंग का सम्बन्ध दीर्घकालीन [illegible] की वृद्धि में निर्णय लेने से है। यह नई अथवा विद्यमान परियोजनाओं पर [illegible] व्ययों की दीर्घकालीन योजना है जिससे फर्म को भविष्य में लाभ मिलता है। यह दीर्घकालीन अथवा स्थायी सम्पत्तियों में विनियोग सम्बन्धी निर्णय करने की तकनीक है। इस प्रकार से पूँजी बजटिंग का सम्बन्ध पूँजीगत व्ययों के आवंटन की पहचान, चयन, निर्णय की सम्पूर्ण प्रक्रिया से है।

जे. [illegible] के अनुसार,
"पूँजी बजटिंग पूँजी के विनियोग एवं अधिप्राप्ति के लिए मार्गों को एक व्यावहारिक है।"

मिल्टन के लिए [illegible]
मिल्टन एच. स्पेन्सर के अनुसार "पूँजी बजटिंग में सम्पत्तियों के लिए रकमों को शामिल किया जाता प्रायः होता है।"
अतः, पूँजी बजटिंग निर्णयों का सम्बन्ध ऐसे दीर्घकालीन सम्पत्तियों से है जिनसे भविष्य में कई वर्षों आय प्राप्त होती है। यह आय अथवा लागतें बिक्री में वृद्धि अथवा कम लागत के रूप में हो सकती है। पूँजी बजटिंग निर्णयों में स्थायी सम्पत्तियों की अधिप्राप्ति पुरानी सम्पत्ति की जगह नई सम्पत्ति को शामिल करना है।
उपर्युक्त वर्णन से पूँजीगत व्ययों से निर्देश किया जाता है।

4. निवेश को व्यापार को इसकी कई वर्षों तक लाभ मिलता है।

5. पूँजीगत व्यय खर्चों से सम्बन्धित निर्णय अधिक जोखिम पूर्ण होते है।

03

Scanned with OKEN Scanner